गया है ।

माँग की लोच की परिभाषा
(DEFINITION OF ELASTICITY OF DEMAND)

माँग की लोच अथवा माँग की कीमत लोच का अभिप्राय कीमत के सूक्ष्म परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाले माँग की मात्रा में परिवर्तन की माप से है ।

मार्शल के अनुसार, "माँग की लोच का बाजार में कम या अधिक होना इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तु की कीमत में एक निश्चित मात्रा में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में सापेक्ष रूप से अधिक या कम अनुपात में परिवर्तन होता है ।"[1]

Scanned by CamScanner

सैम्युलसन के शब्दों में, **माँग की लोच का विचार** "कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप **माँग की मात्रा में परिवर्तन के अंश, अर्थात् माँग में प्रतिक्रियात्मकता के अंश को बताता है।"**[1]

$$\text{माँग की लोच } (e_d) = \frac{\text{माँग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

$$\text{Elasticity of Demand} = \frac{\text{Proportionate Change in Quantity Demanded}}{\text{Proportionate Change in Price}}$$

चित्र 1 में DD माँग वक्र है। यह माँग वक्र यह बताता है कि अन्य तत्वों के स्थिर रहने पर माँग एवं वस्तु की कीमत में प्रतिलोम सम्बन्ध होता है। चित्र में बिन्दु P पर उपभोक्ता OC वस्तु कीमत पर OA वस्तु मात्रा का उपभोग कर रहा है। कीमत में ΔP कमी होने पर उपभोक्ता वस्तु की उपभोग मात्रा ΔQ बढ़ा देता है। दूसरे शब्दों में, कीमत की कमी के कारण उपभोक्ता की माँग में वृद्धि हो जाती है।

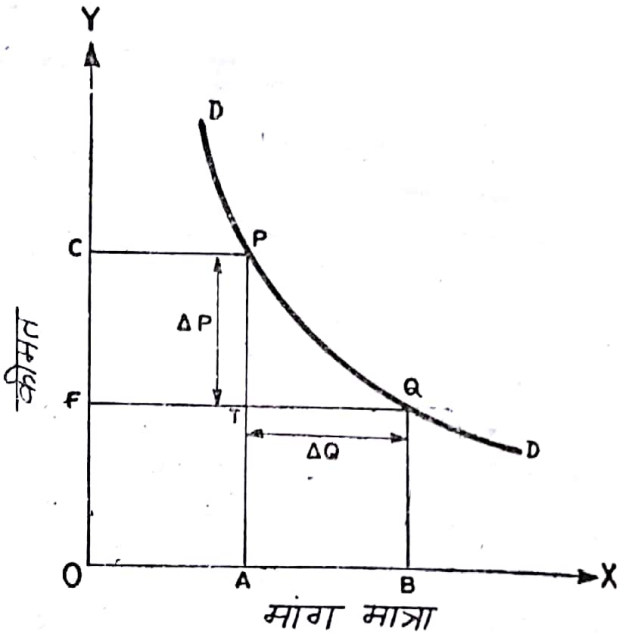

चित्र 1—माँग की लोच

चित्रानुसार,

$$e_d = \frac{\text{वस्तु की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}} = \frac{\Delta Q/Q}{\Delta P/P}$$

जहाँ,

ΔQ = माँग में परिवर्तन

Q = आरम्भिक माँग

ΔP = कीमत में परिवर्तन

P = आरम्भिक कीमत

किन्तु **माँग की लोच ऋणात्मक** (Negative) **होती है क्योंकि वस्तु की माँग और उसकी कीमत में विपरीत सम्बन्ध होता है।** अतः,

$$e_d = \frac{\Delta Q/Q}{\Delta P/P} = -\frac{\Delta Q}{Q} \cdot \frac{P}{\Delta P}$$

$$e_d = -\frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q}$$

माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ
(DEGREES OF PRICE ELASTICITY OF DEMAND)

माँग की कीमत लोच 5 प्रकार की हो सकती है :

Scanned by CamScanner

(1) **सापेक्षतः लोचदार माँग** (Relatively Elastic Demand)—जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसकी माँग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन हो जाता है तब ऐसी वस्तु की माँग को सापेक्षतः लोचदार माँग कहते हैं। अर्थात्

$$\frac{\Delta Q}{Q} > \frac{\Delta P}{P}$$

चित्र 2 में P बिन्दु पर OC कीमत तथा OA वस्तु मात्रा के साथ उपभोक्ता का कुल व्यय OCPA आयत क्षेत्र के बराबर है। कीमत के घटकर OF हो जाने पर उपभोक्ता वस्तु माँग OB के साथ OFQB क्षेत्र के बराबर कुल व्यय करता है अर्थात् कीमत में कमी के कारण जहाँ एक ओर उपभोक्ता के कुल व्यय में CPTF आयत क्षेत्र के बराबर कमी हो रही है वहीं TQBA के बराबर वृद्धि हो रही है। अर्थात्,

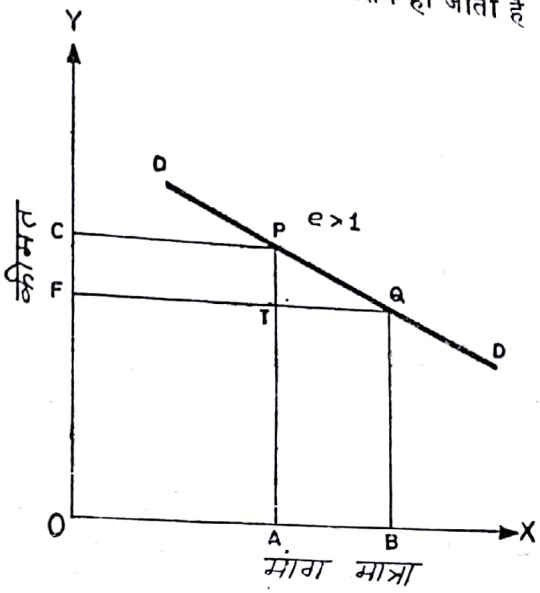

चित्र 2— माँग की इकाई से अधिक लोच

कीमत घटने पर उपभोक्ता की माँग में सापेक्षिक रूप से अधिक परिवर्तन हो रहा है अतः माँग की लोच इकाई से अधिक है।

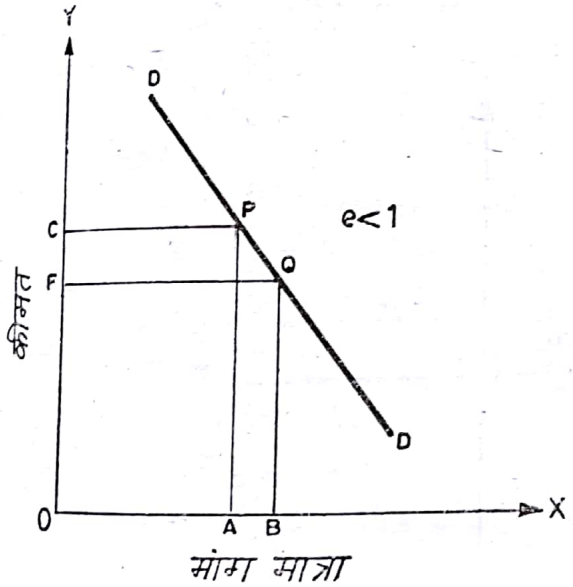

चित्र 3—माँग की इकाई से कम लोच

(2) **सापेक्षतः बेलोचार माँग** (Relatively Inalastic Demand)—जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कम आनुपातिक परिवर्तन होता है तो ऐसी वस्तु की माँग को सापेक्षतः बेलोच माँग कहते हैं। अर्थात्

$$\frac{\Delta Q}{Q} < \frac{\Delta P}{P}$$

चित्र 3 में माँग वक्र सापेक्षतः बेलोचदार है क्योंकि कीमत में CF कमी होने पर माँग में केवल AB के बराबर वृद्धि होती है इसके कारण माँग की लोच सापेक्षतः बेलोच हो जाती है।

(3) **इकाई लोचदार माँग** (Unit Elasticity of demand)—जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी माँग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है तब ऐसी वस्तु की माँग को इकाई लोचदार माँग कहा जाता है। अर्थात्

$$\frac{\Delta Q}{Q} = \frac{\Delta P}{P}$$

चित्र 4 में CF कीमत में कमी होने पर माँग में AB वृद्धि होती है। चित्र से स्पष्ट है कि माँग में परिवर्तन का अनुपात कीमत में परिवर्तन के अनुपात के बराबर है। अतः माँग की लोच इकाई के बराबर है।

Scanned by CamScanner

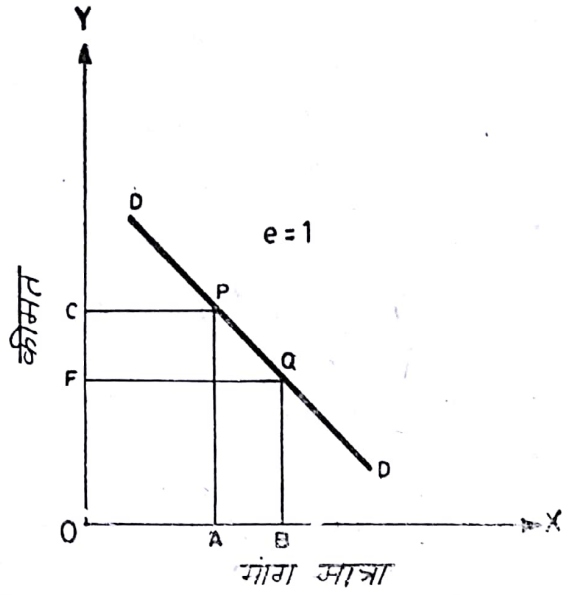

चित्र 4—माँग की लोच इकाई के बराबर

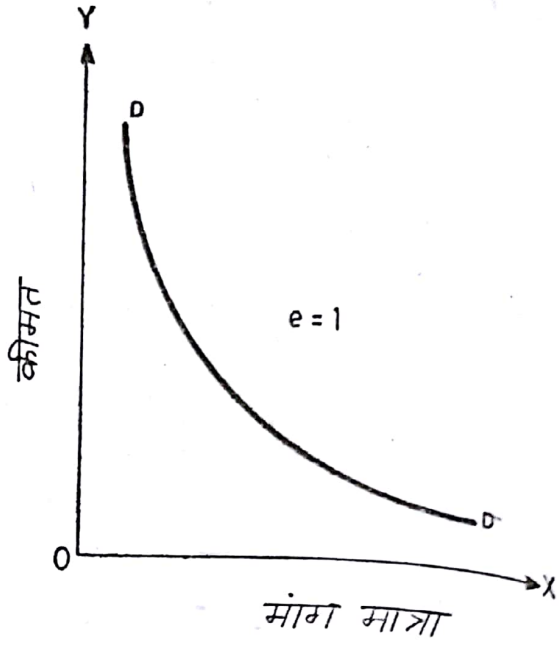

चित्र 5—आयताकार अतिपरवलय

आयताकार अतिपरवलय (Rectangular Hyperbola) **के सन्दर्भ में माँग की कीमत लोच सदैव इकाई के बराबर होती है।**

चित्र 5 में DD आयताकार अतिपरवलय है जो अक्षों की ओर बढ़ता तो है किन्तु कभी अक्षों को स्पर्श नहीं करता। इस वक्र के प्रत्येक बिन्दु पर कुल व्यय सदैव स्थिर रहता है जिसके कारण आयताकार अतिपरवलय के लिए माँग की लोच इकाई के बराबर होती है।

(4) **पूर्णतः बेलोचदार माँग** (Perfectly Inelastic Demand)—जब किसी वस्तु की कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कोई परिवर्तन न हो, तो ऐसी माँग को पूर्णतः बेलोच माँग कहते हैं। अर्थात्—

$$\frac{\Delta Q}{Q} = 0$$

चित्र 6 में OC कीमत पर OD माँग है तथा कीमत में कमी होने पर भी माँग OD ही रहती है। दूसरे शब्दों में, कीमत में कमी या वृद्धि का वस्तु की माँग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है जिसके कारण वस्तु की माँग पूर्णतः बेलोचदार हो जाती है।

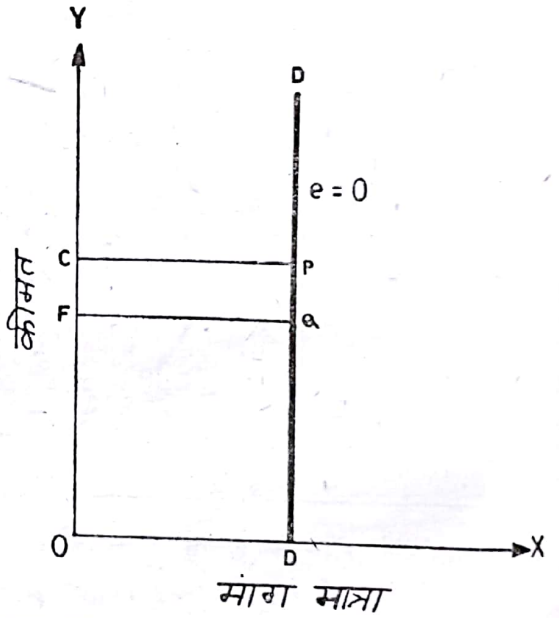

चित्र 6—पूर्णतः बेलोचदार माँग

पूर्णतः बेलोचदार माँग वक्र Y अक्ष के समानान्तर एक खड़ी रेखा के रूप में होता है।

(5) **पूर्णतया लोचदार माँग** (Perfectly Elastic Demand)—जब किसी वस्तु की कीमत में नगण्य परिवर्तन (अथवा कीमत स्थिर रहने पर भी) होने पर भी माँग में अत्यधिक परिवर्तन होता रहता है तब ऐसी वस्तु की माँग को पूर्णतया लोचदार माँग कहा जाता है। ऐसी माँग की दशा में वस्तु की अति सूक्ष्म मूल्य वृद्धि उसकी माँग को शून्य कर देती है तथा कीमत में अति सूक्ष्म कमी माँग में इतना अत्यधिक विस्तार करती है कि कोई अन्य विक्रेता घटी हुई कीमत

Scanned by CamScanner

पर इस माँग को सन्तुष्ट नहीं कर पाता। व्यावहारिक एवं वास्तविक जीवन में वस्तुतः किसी वस्तु की माँग पूर्णतः लोचदार माँग नहीं होती। पूर्णतः लोचदार माँग की दशा में

$$\frac{\Delta P}{P} = 0$$

चित्र 7 में पूर्णतया लोचदार माँग वक्र DD प्रदर्शित किया गया है। चित्र में वस्तु मूल्य OD पर वस्तु की माँग OA है। OD कीमत पर वस्तु की माँग बढ़कर OB हो जाती है। यही कारण है कि पूर्णतया लोचदार माँग वक्र X अक्ष के समानान्तर एक पड़ी रेखा के रूप में होता है।

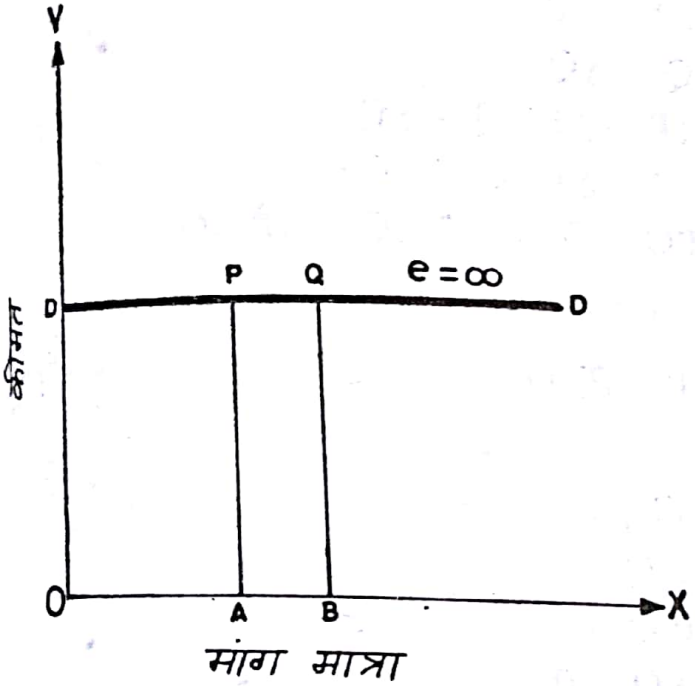

चित्र 7—पूर्णतया लोचदार माँग

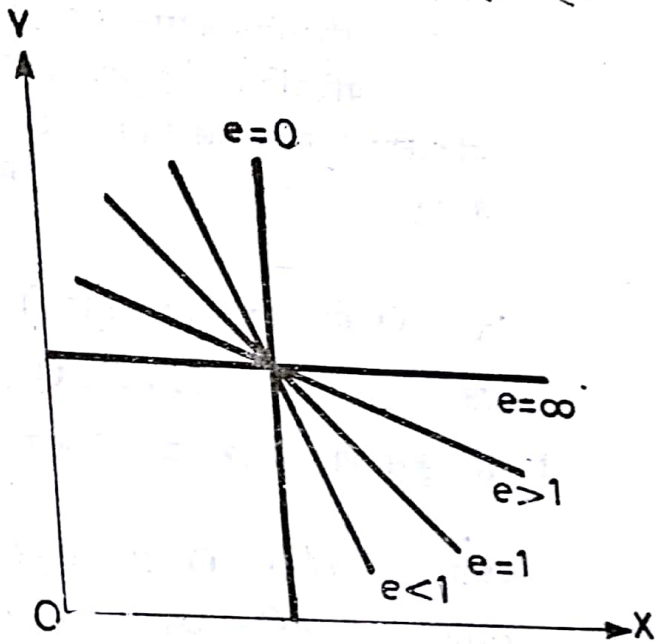

चित्र 8—माँग की विभिन्न लोच

माँग की कीमत लोच की पाँचों श्रेणियों को एक ही चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है (देखें चित्र 8)।

Scanned by CamScanner